एकलव्य का प्रकाशन

चूहे को मिली पेंसिल

एक चित्रकथा

वी. सुतेयेव

चूहे को मिली पेंसिल

चित्र और कहानी
वी. सुतेयेव

एकलव्य का प्रकाशन

चूहे को मिली पेंसिल

CHUHE KO MILEE PENCIL

स्टोरीज़ एण्ड पिक्चर्स की एक चित्रकथा
प्रगति प्रकाशन, मॉस्को के सौजन्य से प्रकाशित।
चित्र और कहानी: वी. सुतेयेव

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत शासन एवं
सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित।
प्रथम संस्करणः दिसम्बर 2000ँ

100 gsm मेपलिथो व 130 gsm आर्ट कार्ड (कवर) पर प्रकाशित।
ISBN: 978-81-87171-91-1

यह किताब अँग्रेज़ी में भी उपलब्ध है।

प्रकाशक: एकलव्य
ई-10, बीडीए कॉलोनी शंकर नगर,
शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.)
फोनः (0755) 255 0976, 267 1017 फैक्सः (0755) 255 1108
www.eklavya.in
सम्पादकीयः books@eklavya.in
किताबें मँगवाने के लिएः pitara@eklavya.in

चूहे को मिली पेंसिल

एक बार एक चूहा खाने के लिए कुछ ढूँढ रहा था। उसे एक पेंसिल मिली।

चूहा पेंसिल लेकर अपने बिल में घुस गया।
“मुझे छोड़ दो, मुझे जाने दो,” पेंसिल चूहे से गिड़गिड़ाकर बोली। “मैं तुम्हारे किस काम की हूँ, लकड़ी का टुकड़ा हूँ। खाने में भी अच्छी नहीं लगूँगी।”

“मैं तुम्हें कुतरूँगा,” चूहे ने कहा। “मुझे अपने दाँत पैने और छोटे रखने के लिए हमेशा कुछ न कुछ कुतरना पड़ता है।” और, चूहे ने पेंसिल कुतरना शुरू कर दिया।

"उई! मुझे दर्द हो रहा
है," पेंसिल ने कहा।
"मुझे एक आखिरी चित्र
बना लेने दो,
फिर तुम जो चाहो
करना।"

"ठीक है," चूहे ने कहा, "तुम चित्र बना लो। फिर मैं चबाकर तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।"

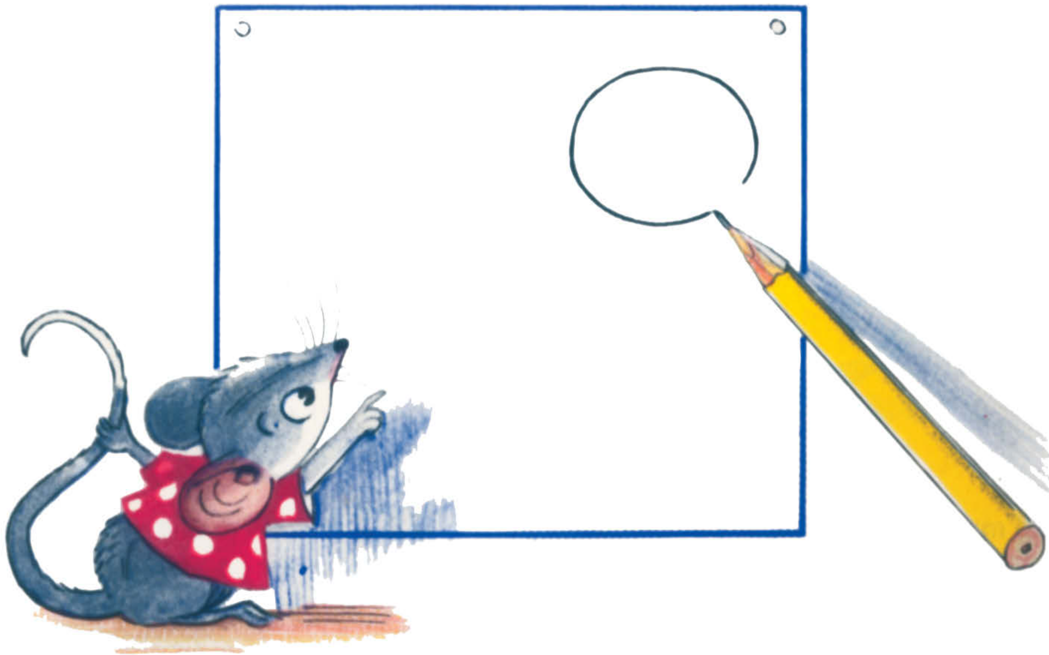

पेंसिल ने ठण्डी साँस ली। और एक बड़ा-सा गोला बना दिया। “यह क्या पनीर का टुकड़ा है?” चूहे ने पूछा।

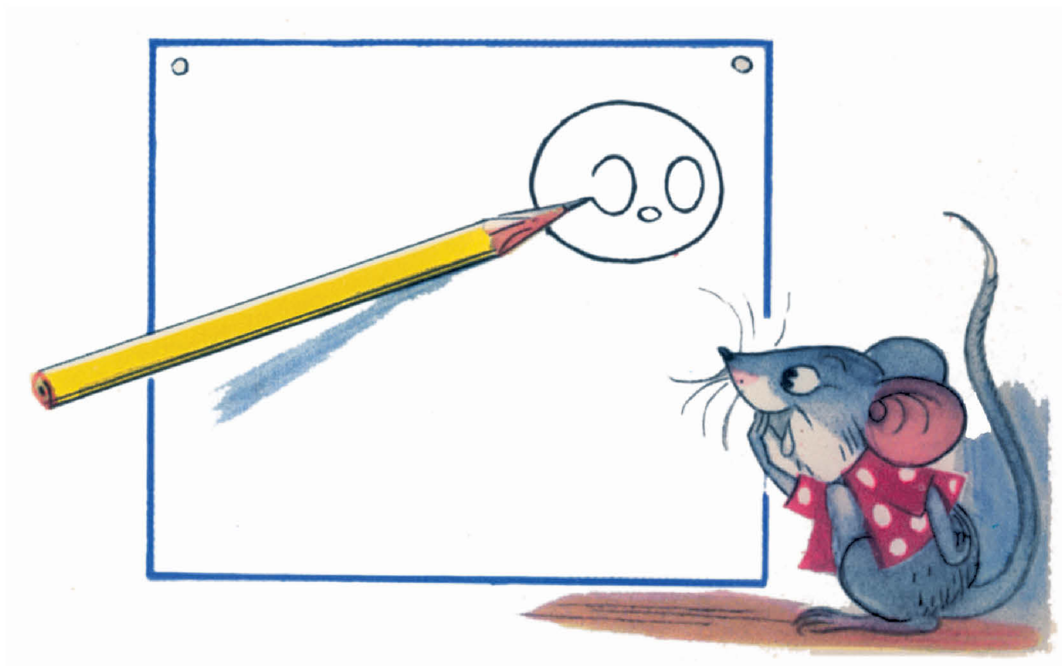

“ठीक है। हम इसे पनीर ही कहेंगे,” पेंसिल ने कहा। फिर पेंसिल ने बड़े गोले के अन्दर तीन छोटे गोले बना दिए।

“हाँ अब यह पनीर ही लग रहा है,” चूहे ने कहा। “उसमें वो छेद जो नज़र आ रहे हैं।”

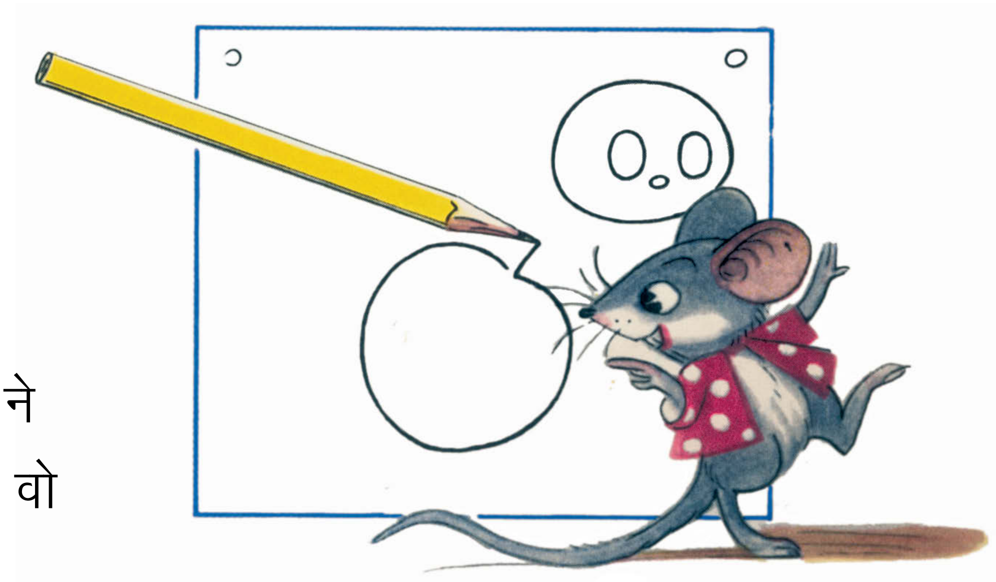

“चलो, हम उन्हें पनीर में छेद बोलेंगे।” पेंसिल ने मान लिया और उसने बड़े गोले के नीचे एक और बड़ा गोला बनाया।

“अरे यह तो
सेब है,” चूहा
चहका।

“हाँ, इसे सेब कह लेते हैं,” पेंसिल ने कहा। पेंसिल फिर दूसरे बड़े गोले के पास कुछ अजीब से चित्र बनाने लगी।

"अरे वाह। अब तो मज़ा ही आ गया। ये तो चमचम हैं।" चूहे के मुँह में पानी आने लगा।

"जल्दी करो। मुझे खाना है।"

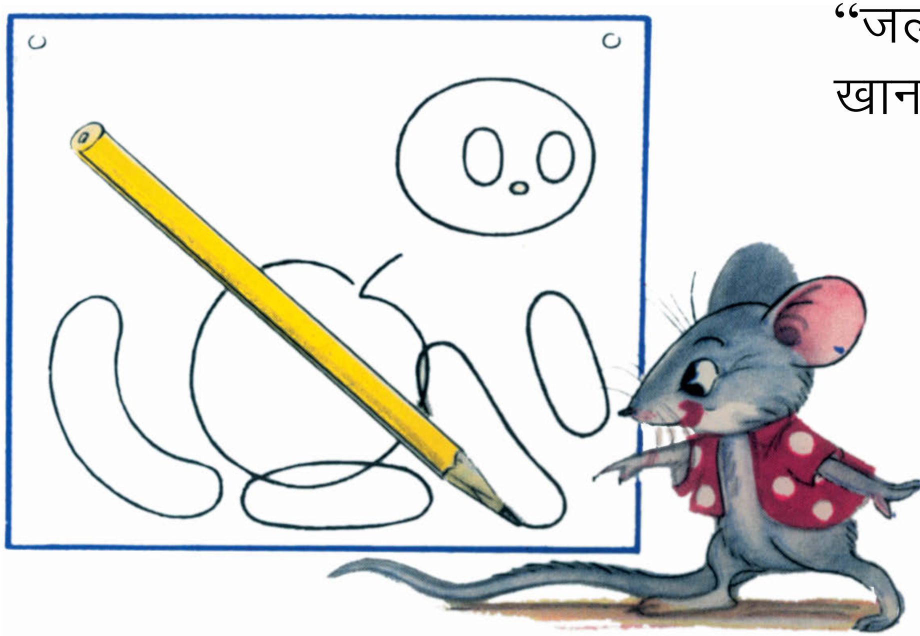

पेंसिल ने ऊपर वाले गोले के ऊपर दो छोटे तिकोन बना दिए।

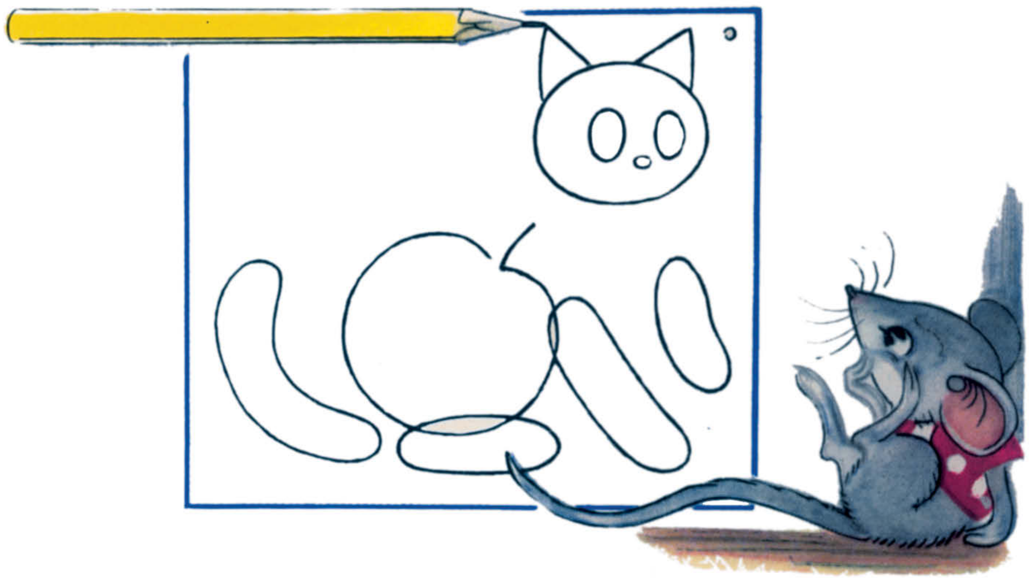

“अरे, अरे!” चूहा चीखा। “अब तो तुम उसे बिल्ली की तरह बनाने लगीं। और आगे मत बनाओ।”

लेकिन पेंसिल बनाती गई। उसने ऊपर के गोले पर लम्बी-लम्बी मूँछें और मुँह बनाया।

चूहा डरकर चिल्लाया, "अरे बाप रे! यह तो बिलकुल असली बिल्ला लग रहा है। बचाओ।"

ऐसा कहकर वह भागकर अपने बिल में घुस गया।

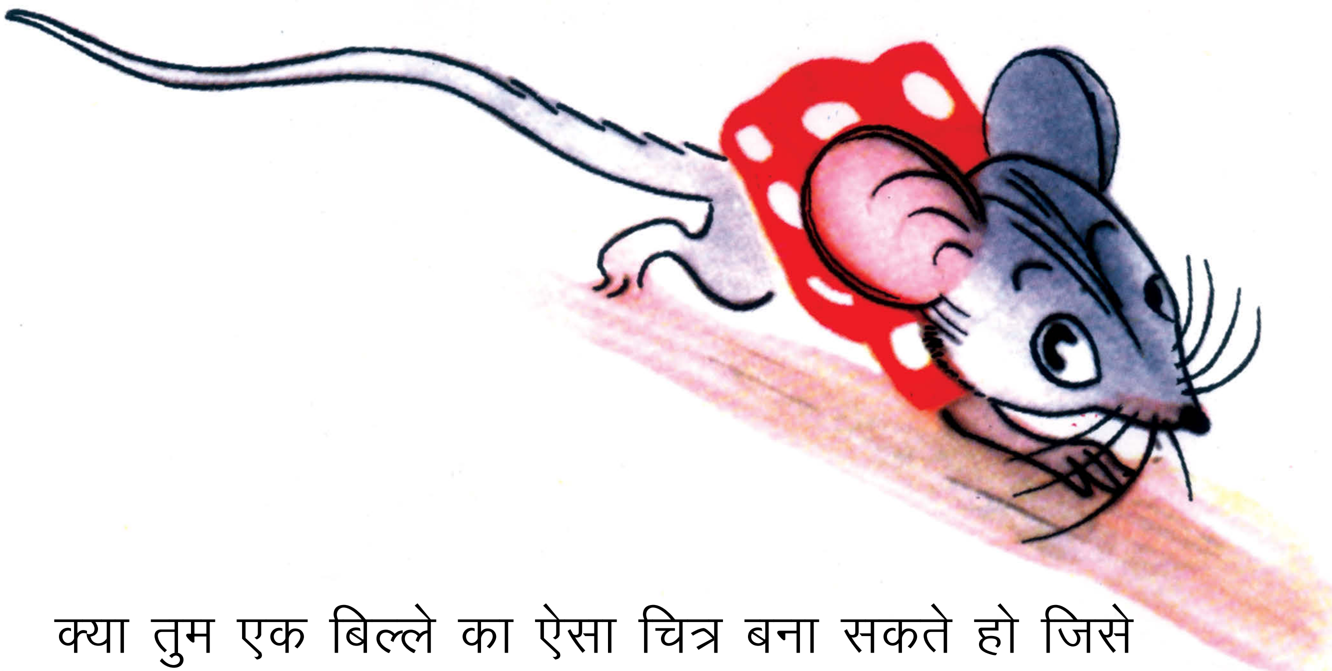

क्या तुम एक बिल्ले का ऐसा चित्र बना सकते हो जिसे देखकर चूहा डर जाए।

एकलव्य का प्रकाशन

ISBN: 978-81-87171-91-1